

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, खण्डवा रोड, इंदौर-452 001

फा.क्रमांक. प्रिंटिंग/पब्लिकेशन/प्रेस रिलीज/2020/1

दिनांक: 07.09.2020

प्रेस विज्ञप्ति

राजस्थान के कृषको द्वारा बोई गई सोयाबीन की फसल में विगत दिनों कीट एवं रोगों के प्रकोप से आई समस्याओं पर विचार विमर्श एवं तकनीकी मार्गदर्शन हेतु कृषि विभाग, कोटा (राजस्थान) एवं भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 05.09.2020 को एक तकनीकी चर्चासत्र का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया जिसमें वरिष्ठ कृषि अधिकारी, कोटा कृषि विश्वविद्यालय एवं भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान तथा प्रगतिशील क्रिसको समेत कुल 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया. चर्चासत्र के प्रारंभ में संस्थान के कीट वैज्ञानिक डॉ. लोकेश कुमार मीणा द्वारा, सोयाबीन के प्रमुख कीट, नुकसान के लक्षण एवं प्रबंधन के उपायों पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी गयी. इसी प्रकार, डॉ. लक्ष्मण सिंह, वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान) ने इस अवसर पर सोयाबीन की फसल पर इस वर्ष प्रकोप करने वाले प्रमुख रोगों के लक्षण एवं नियंत्रण के उपायों पर पॉवर पॉइंट के माध्यम से जानकारी दी गयी.

इस तकनीकी चर्चासत्र में विशेष रूप से आमंत्रित संस्थान के भूतपूर्व कीट विशेषज्ञ एवं फसल संरक्षण विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमर नाथ शर्मा द्वारा कीट एवं रोगों के संक्रमण से होने वाले नुकसान को रोकने हेतु, समेकित कीट प्रबंधन के सभी तरीकों को अपनाने की सलाह दी. इस तकनीकी चर्चा सत्र में संस्थान के डॉ. मृणाल कुचलन, बीज वैज्ञानिक, ने सोयाबीन बीज का सही तरीके से भण्डारण एवं बीज उपचार के बारे में जानकारी दी। तत्पश्चात हुए कोटा कृषि विश्वविद्यालय एवं राजस्थान कृषि विभाग के अधिकारियों तकनीकी चर्चासत्र में यह ज्ञात हुआ कि अत्यधिक वर्षा होने से पूर्व अधिक समय तक सूखे की अनुकूल स्थिति में तना मक्खी का प्रकोप हुआ जो की अत्यधिक बारिश से हुई जलभराव की स्थिति में अन्थ्रेक्नोज एवं रायज़ोक्टोनिया एरियल ब्लाइट (RAB) जैसी फफुन्डजनित बीमारियों के फैलाव के कारन अधिकतर कृषको द्वारा बोई गयी सोयाबीन प्रजाति जे एस. 95-60 सोयाबीन की फसल सुखकर नष्ट हुयी. यह भी ज्ञात हुआ की राजस्थान के कोटा संभाग के प्रमुख जिलो (कोटा, झालावाड, बूंदी, एवं बारां) में अधिकतर कृषक इस प्रजाति की बोवनी 30 सेमी. की दूरी पर करते हैं जिससे कम शाखाये बन्ने से तना मक्खी का प्रकोप अधिक होता है तथा नुकसान की सम्भावना भी अधिक होती हैं. अतः

संस्थान की निदेशक महोदया डॉ. नीता खांडेकर ने सोयाबीन उत्पादन की अनुशंसित सस्य क्रियाओं के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर जोर दिया. कार्यक्रम का संचालन अध्यक्ष, फसल संरक्षण विभाग, डॉ महावीर प्रसाद शर्मा, ने किया तथा चर्चासत्र के अंत में डॉ. लक्ष्मण सिंह राजपूत ने सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया ।

ICAR-Indian Institute of Soybean Research, Indore- 452001

F.No.Printing/Publication/Press Release/2020/1

Date: 07.09.2020

A technical session was conducted by ICAR-Indian Institute of Soybean Research, Indore on 05.09.2020 via online mode to discuss issues related to the recent problems created due to the infestation of pest and diseases in soybean growing districts of Rajasthan in collaboration with the Department of Agriculture, Kota Division, Rajasthan with the total participation of 70 officers including a group of progressive farmers, Senior Agriculture Officers, Kota Agricultural University and scientists of ICAR-IISR, Indore. At the outset, Dr. Lokesh Kumar Meena, Scientist (Entomology) of the IISR briefly presented about the major insect pest of soybean, their nature of damage, symptoms along with control measures. Similarly, Dr. Laxman Singh, Scientist (Plant Pathology) has also given a digital presentation on major diseases of soybean crop during the current year, their symptoms and control measures.

The technical session was also attended by former Head, Crop Protection Division of ICAR-IISR, Dr. Amar Nath Sharma who emphasized on importance of adopting the integrated pest management practices for containing the insect pest infestations and losses due to the disease. In the same session, Dr. Mrunal Kuchlan, Scientist (Seed Technology) has elaborated about the precise techniques of seed storage and maintaining seed viability during the storage period.

During the discussion with the officers of Kota Agricultural University and Agriculture Department, it was brought to the notice that the situation of increased incidence of Stem fly coupled with favorable weather caused due to a long dry spell before heavy raining in the region lead to developing a water logging situation which made the development of fungal diseases like Anthracnose and Rhizoctonia Aerial Blight (RAB) severely infected and destroyed the soybean variety JS 95-60 which is popularly grown by majority of farmers of the region. During the session, it was informed by the officers of Department of Agriculture, Rajasthan that most of the farmers are growing soybean crop at 30 cm row to row spacing with increased seed rate resulting in increased vegetative growth, less branching facilitating an ideal situation for the growth of Stem fly and heavy crop losses. Considering the overall situation, Dr. Nita Khandekar, Director, ICAR-Indian Institute of Soybean Research has stressed the need of promoting the recommended package of agronomical practices as suggested by soybean R&D System. The program has conducted by Dr. Mahaveer Prasad Sharma, Head of the Crop Protection division and ended with the vote of thank proposed by Dr. Laxman Singh.